बी.एड. के विज्ञान और कला के छात्रों का उनके विभिन्न बौद्धिक स्तरों पर मूल्यों का अध्ययन

अरुणा पथिक*

सारांश

मूल्य को यदि हम साधारण शब्दों में परिभाषित करें तो यह किसी वस्तु की कीमत होती है। परंतु जब हम इसे मानव जीवन से जोड़ देते हैं तो ये उसके आदर्श, किसी चीज को करने का तरीका, उसकी विचारधारा आदि से जुड़ जाते हैं। हर व्यक्ति के जीवन के कुछ मूल्य होते हैं जो उसे उसके परिवार, उसके अनुभवों से मिले होते हैं। इन्हें वह अपने व्यक्तिगत मूल्य कहता है जिस पर चलकर वह अपना जीवन व्यतीत करता है और जो उसकी पहचान का आधार बनता है। बी.एड. के कला व विज्ञान के छात्रों के मूल्यों का उनके विभिन्न बौद्धिक स्तरों पर शैरी व वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य प्रश्नावली व आर. के. टंडन के बुद्धि परीक्षण द्वारा अध्ययन किया गया तथा दोनों के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तावना

सभी मानव जो समाज में रहते हैं और यहाँ पर रहते हुए उनके जीवन से कुछ मूल्य जुड जाते हैं जिनके अनुसार वह व्यवहार करते हैं। ये मूल्य सामाजिक मूल्य कहलाते हैं क्योंकि ये समाज में रहने में उनकी सहायता करते हैं। वैसे मूल्य को कई तरह से व्यक्त किया जाता है। यह अभिव्यक्ति उस आधार पर बनती है जिस आधार पर हम इसे प्रयोग में लाते हैं। जैसे आर्थिक क्षेत्र में यह कीमत का प्रतीक होते हैं, वहीं नैतिक क्षेत्र में नैतिकता का और व्यक्तिगत क्षेत्र में व्यक्तिगत मूल्यों का।

यदि हम मूल्य शब्द की उत्पत्ति की बात करें तो यह संस्कृत के ''इष्ट'' शब्द से बना है जिसका अर्थ है – ''वह जो इच्छित है। यदि इम इसे सही अर्थ देना चाहें तो सभी व्यक्ति इस पर एकमत नहीं है। दर्शन शास्त्र और समाजशास्त्र में तो इसका अर्थ बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं है। परंतु मानव अस्तित्व के लिए ये एक महत्त्वपूर्ण वस्तु होते हैं, जो उसकी पहचान का आधार बनते हैं, उसके जीवन को दिशा प्रदान करते हैं।

अतः यही कहा जा सकता है कि मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना व सरीयता को प्रकट करता है। यह एक आदर्श या इच्छा है जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीता है व जीवन भर प्रयास करता रहता है।

मूल्यो की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:–

1. मूल्य समाज के दार्शनिक चिंतन व व्यक्ति के जीवन दर्शन के अनुरुप होते हैं।
2. इनका स्वभाव व्यक्तिनिष्ठ होता है।
3. ये मानव व्यवहार और कार्यों को प्रभावित करते हैं।
4. इनके साथ संवेग जुडे होते हैं।
5. ये व्यक्ति व समाज के आदर्श विश्वास, मानदंडों को प्रभावित करते हैं।
6. ये ध्येय से संबधित होते हैं।

अतः ये आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ और आपेक्षिकीय होते हैं। मूल्यों के प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं।

1. ये वस्तुओं के महत्त्व के बारे में विचार हैं।
2. ये प्रत्यय, अमूर्तिकरण व भावनाएं हैं तथा

**प्राध्यापिका, स्टारेक्स शिक्षा संस्थान, बिलासपुर (गुडगांव)

उनके संज्ञानात्मक, अनुभावात्मक व क्रियात्मक पक्ष को बताते हैं।

3. ये सशक्त सांवेगिक वचनबद्धता हैं। व्यक्ति जिस वस्तु को मूल्यवान मानता है उसकी अधिक देखभाल करता है।
4. इनके अस्तित्व का क्षेत्र मानव मन है।
5. तर्क के बिना ये खोखले होते हैं।
6. इनमें इच्छाएं और भाव निहित होते हैं।
7. ये चिंतन के माध्यम से प्रकट होते हैं।
8. ये अच्छे बुरे, सही–गलत, सत्य–असत्य की पहचान कराते हैं।
9. ये निरंतर अनुभवों से संबंधित होते हैं। अनुभव ही इन्हें रुप देते हैं तथा इनकी जाँच में सहायक होते हैं।
10. इनका परिमाणात्मक और गुणात्मक आंकलन संभव है।
11. सभी मूल्य सभी लोगों के लिए समान महत्त्व नहीं रखते।

वर्तमान शोध कार्य शोधकत्री ने इसलिए किया क्योंकि प्रत्येक युग के अपने कुछ स्थापित मूल्य होते हैं जिन पर उस युग के लोग चलकर अपनी पहचान बनाते हैं जैसे प्राचीनकाल में आध्यात्मिकता, मध्यकाल व साम्राज्यवादी काल में स्वामिभक्ति और देशभक्ति। परंतु वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है और इसमें लोग भौतिकवादिता से प्रभावित है। इस कारण आज लोगों में मूल्यों के प्रति आस्था कम हो गई है जिस कारण लोगों का नैतिक सामाजिक और पतन होता जा रहा है आज व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धि को अधिक महत्त्व देता है ओर अन्य लोगों की क्या वह अपने माता–पिता के प्रति निभाऐ जाने वाले अपने कर्त्तव्यों में भी अपना स्वार्थ देखता है।

अतः उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए यह अध्ययन किया गया कि वर्तमान समय में लोग अपने मूल्यों के प्रति खासकर छात्र अध्यापक कितने सचेत हैं क्योंकि आने वाली भावी पीढ़ी का भविष्य उनके द्वारा ही बनाया जाना है।

शोध के उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य

इस शोध के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:–

1. बी.एड. के विज्ञान व कला के छात्रों के मूल्यों का पता लगाना।
2. बी.एड. के विज्ञान व कला के छात्रों के बौद्धिक स्तरों के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।
3. बी.एड. के विज्ञान व कला के छात्रों का उनके विभिन्न बौद्धिक स्तरों के आधार पर उनके मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. बी.एड. के छात्रों व छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अन्य उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:–

1. बी.एड. के पुरुष छात्रों के विभिन्न बौद्धिक स्तरों के आधार पर उनके मूल्यों का अध्ययन करना।
2. बी.एड. की महिला छात्राओं के विभिन्न बौद्धिक स्तरों के आधार पर उनके मूल्यों का अध्ययन करना।
3. इन छात्रों और छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. बी.एड. के छात्र, छात्राओं के विभिन्न मूल्यों के स्तरों को ज्ञात करना।
5. बी.एड. के ग्रामीण छात्र और छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. बी.एड. के शहरी छात्र और छात्राओ के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं:–

1. बी.एड. के विज्ञान व कला के विद्यार्थियों के मध्य मूल्यों में सार्थक अंतर होता है।
2. बी.एड. के विज्ञान व कला के विद्यार्थियों के विभिन्न बौद्विक स्तरों पर मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जाता है।
3. बी.एड. के विद्यार्थियों के मूल्यों मे सार्थक अंतर पाया जाता है।
4. बी.एड. के विद्यार्थियों का उनके विभिन्न बौद्विक स्तरों तथा उनके मूल्यों में सार्थक अंतर होता है।
5. बी.एड. को शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यो में सार्थक अंतर पाया जाता है।

अध्ययन विधि

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि

इस शोध के लिए दो परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:–

1. शैरी और वर्मा की व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली।
2. आर.के. टंडन का सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण (1/61)

न्यादर्श:– इस अध्ययन के लिए बी.एड. के 200 छात्र/छात्राओं का चयन किया गया जोकि गुडगांवा जिले के बी.एड. महाविद्यालयों से थे।

इस शोध के आंकडों के विशलेषण के लिये मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व टी परीक्षण का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन के अंतर्गत दस मूल्यों को लिया गया है जो इस प्रकार है:–

1. **धार्मिक मूल्य:**– ये मूल्य हमारी आस्था और विश्वास से जुडे हुए हैं तथा हमारे जीवन में अपनाए जाने वाले संस्कारों और रीति–रिवाजों में प्रमुख स्थान रखते हैं। यानि ये मूल्य भारतीय जीवन शैली का आधार हैं।
2. **सामाजिक मूल्य:**– ये मूल्य हमारे सामाजिक आचार विचार से जुडे हुए हैं। इनको आधार बनाकर व्यक्ति समाज में सफल सामाजिक जीवन व्यतीत करता है।
3. **लोकतांत्रिक मूल्य:**– ये वे मूल्य हैं जो लोकतांत्रिक व्यवहार यानि ''जियो और जीने दो'' के सिद्वांत से जुडे हुए हैं। इसमें बिना किसी भेदभाव के समाज में सम्मान पूर्वक रहने को सम्मिलित किया जाता है।
4. **सौंदर्यात्मक मूल्य:**– ये मूल्य व्यक्ति के सौंदर्य बोध से जुडे हुए हैं। इनके आधार पर व्यक्ति प्रत्येक वस्तु के सुंदर पक्ष को देखता है।
5. **आर्थिक मूल्य:**– आमतौर पर यह मूल्य धन से जुडा हुआ है। परंतु सामाजिक व्यवहार में हम इसे वस्तु की उपयोगिता से जोडते हैं।
6. **ज्ञानात्मक मूल्य:**– ये मूल्य ज्ञान के सैद्वांतिक आधार से जुडें हुए हैं। इसमें यह माना जाता है कि जो व्यक्ति इन मूल्यों से जुडे होते हैं वे नए तथ्य खोजने के प्रति प्रयत्नशील रहते हैं और सफलता पाने का प्रयास करते हैं।
7. **आनंदमयी मूल्य:**– ये मूल्य प्रेम, प्रसन्नता और सुख दुख के अनुभव से जुडे होते हैं। इस मूल्य को अपनाने वाला व्यक्ति सदैव प्रसन्नता की तरफ आकर्षित रहता है।
8. **सत्तात्मक मूल्य:**– ये मूल्य व्यक्ति की सत्ता या शासन पर अपना अधिकार करने की भावना से जुडे हुए हैं। ऐसे व्यक्ति सत्ता में बने रहने के लिए हर प्रकार का कार्य (सही या गलत) करने के लिए तैयार रहते हैं।
9. **पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य:**– ये मूल्य व्यक्ति की परिवार के प्रति प्रतिष्ठा, आस्था, कर्त्तव्य भावना से जुडे होते हैं।
10. **स्वास्थ्यात्मक मूल्य:**– ये मूल्य व्यक्ति की शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सचेतता से जुडे हुए हैं इसमें व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने वाले कार्य जैसे संतुलित भोजन लेना, व्यायाम

करना आदि सम्मिलित करता है।

परिणाम

इस शोध अध्ययन के ये परिणाम रहेः—

1. बी.एड. के छात्र/छात्राएं लोकतांत्रिक मूल्यों में अधिक विश्वास करते हैं और सभी को स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीने देने को महत्व देते हैं।
2. कला और विज्ञान ही विषयों के विद्यार्थी ज्ञान को नवीन ढ़ंग से अर्जित करने को अधिक महत्व देते हैं।
3. उच्च बौद्विकता वाले छात्र व छात्राएं केवल लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करते हैं। और वे स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीना चाहते हैं।
4. निम्न बौद्विकता वाले छात्र व छात्राएं केवल लोकतांत्रिक मूल्यों में ही विश्वास करते हैं।
5. उच्च बौद्विक स्तर वाले छात्रों की अपेक्षा निम्न बौद्विक स्तर वाले छात्र आर्थिक रुप से अधिक सुरक्षित रहना चाहते हैं यानि वे नौकरी प्राप्त करने को महत्व देते हैं।
6. उच्च बौद्विक स्तर वाली छात्राओं की अपेक्षा निम्न बौद्विक स्तर वाली छात्राएं धार्मिक अधिक हैं। जबकि उच्च बौद्विक स्तर वाली छात्राएं अपनी इच्छाओं को अधिक महत्व देती हैं व हमेशा नवीन ज्ञान प्राप्त करने के प्रति सजग रहती हैं। इसके विपरीत निम्न बौद्विक स्तर वाली छात्राएं आर्थिक स्थिति मजबूत करने को महत्व देती हैं।
7. शहरी छात्र ज्ञानात्मक और सामाजिक मूल्यों को महत्व देते हैं व सत्तात्मक मूल्यों के प्रति उदासीन रहते हैं।
8. शहरी छात्राओं का सामाजिक मूल्यों की तरफ झुकाव अधिक है वही ये स्वास्थ्य मूल्यों को भी महत्व देती हैं तथा अपने को सत्तात्मक स्थिति में भी रखना चाहती हैं।
9. ग्रामीण छात्र स्वास्थ्य मूल्य को अधिक महत्व देते है, साथ ही सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा को भी महत्व देते हैं।
10. ग्रामीण छात्राएं धार्मिक मूल्यों को अत्याधिक महत्व देती हैं। साथ ही ये ज्ञानात्मक मूल्यों को भी महत्व देती हैं क्योंकि ये ज्ञान को जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानती हैं।
11. शहरी छात्रों और छात्राओं के मूल्यों में यह अंतर है कि शहरी छात्राएं राजनीति में भी रुचि लेती हैं तथा सत्ता प्राप्ति का प्रयास करती हैं।
12. शहरी छात्राएं धार्मिक आस्था को तर्क की कसौटी पर रखती हैं वहीं ग्रामीण छात्राएं इन्हें ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ श्रद्वा और आस्था के आधार पर देखती हैं।
13. ग्रामीण छात्राओं और छात्रों के मूल्यों में अंतर स्वास्थ्य मूल्य व सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर पाया जाता है। छात्र कसरत आदि को महत्व देते हैं। छात्राएं घरेलू कार्यों को महत्व देती हैं। छात्र अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को भी बहुत महत्व देते हैं। जबकि छात्राएं लोकतांत्रिक, ज्ञानात्मक, धार्मिक और आर्थिक मूल्यों को महत्व देती हैं।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते हैंः—

1. निम्न और उच्च बौद्विक स्तर छात्र और छात्राएं लोकतांत्रिक मूल्यों को सबसे अधिक महत्व देते हैं। ये बिना किसी भेदभाव के स्वतंत्र विकास और जीवनयापन को महत्व हैं। ये सभी अपनी अपनी सामाजिकता को बढ़ावा देते हुए अपना सामाजिक बनना चाहते हैं। ये सभी छात्र ज्ञानात्मक मूल्य को भी महत्व देते हैं तथा ज्ञान को जीवन का आधार मानते हैं।
2. उच्च बौद्विक स्तर वाले छात्रों और छात्राओं की अपेक्षा निम्न बौद्विक स्तर वाले छात्र और छात्राएं आर्थिक मूल्यों को अधिक महत्व देते

हैं तथा अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए जल्दी ही नौकरी भी प्राप्त करना चाहते हैं।

3. निम्न बौद्विक स्तर वाली छात्राएं अधिक धार्मिक होती हैं जबकि उच्च बौद्विक स्तर वाली छात्राएं तार्किकता, सामाजिकता, सत्ता प्राप्त करके प्रतिष्ठा प्राप्त करने को अधिक महत्व देती है।
4. ग्रामीण विद्यार्थी धार्मिक मूल्यों और पारिवारिक प्रतिष्ठा को महत्व देते हैं जबकि शहरी लोकतांत्रिक तथा सामाजिक मूल्यों को महत्व देते हैं।
5. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में जो अंतर पाया जाता है वह उनकी सोच के आधार पर पाया जाता है।
6. ग्रामीण विद्यार्थी पढ़ाई को महत्व देते हैं जबकि शहरी ज्ञान को महत्व देते हैं।
7. ग्रामीण छात्र सत्ता प्राप्त करने को महत्व देते हैं जबकि शहरी छात्र इसकी उपेक्षा करते हैं।
8. निम्न बौद्विक स्तर वाली छात्राएं आर्थिक रुप से धन अर्जन करने को ज्यादा महत्व देती हैं क्योंकि ये धन को जीवन की प्रगति का आधार मानती हैं।

शैक्षिक उपयोगिता

1. छात्रों और छात्राओं के मूल्यों की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है, इससे वे अपने जीवन और उच्च पढ़ाई के लक्ष्य निर्धारित कर सकेंगें।
2. ये सभी विद्यार्थी अपने अध्यापकों से भी अपने मूल्य के ढांचें में परिवर्तन करने के लिए सहायता प्राप्त कर सकेंगें।
3. ये विद्यार्थी अपनी पसंद के आधार पर अपनी जीवन शैली का चुनाव भी कर सकते हैं तथा उसमें नवीनता ला सकते हैं।
4. उच्च और निम्न बौद्विकता वाले विद्यार्थी एक दूसरे के मूल्यों को जानकर अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकेंगें जिससे उनमें समायोजन बढ़ेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता रेनू (2007): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा – जगदम्बा बुक सेंटर, अंसारी रोड, नई दिल्ली।
2. सक्सैना एन.आर. स्वरुप (2000): शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वांत – आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. डॉ. त्यागी गुरसरनदास (2002): शिक्षा के सिद्वांत – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. डॉ. पाण्डेय रामशकल (2004): शिक्षा की दार्शनिक व समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. डॉ. पाण्डेय रामशक्ल और डॉ. करुणा शंकर मिश्रा (2004): मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. डॉ. लाल आर. बी. और डॉ. मृदला यादव (2004): शिक्षा का सिद्वांत – आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
7. Allport et. al. (2000): Patterns and Growth in Personality Holt Publications, New York.
8. Garrison, Karl, C (1998): Psychology of Adolescence- Prentice Hall, Publishers, New Jersey.
9. Katiyar P.C. : A Study of Values and Vocational preferences of Intermediate Class students of U.P. Unpublished Ph.D. Thesis (Edu.) 1975, Agra, Uni. Agra.
10. Sharma K.K. and Dr. M.S. Sachdeva (2004): Education in the Emerging Indian Society Parkash Book Depot Ludhiana.
11. Yadav R.K. (1979) : A Study of Motives for the Vocational Preferences of adolescents. Unpublished Ph.D Thesis (Education) Agra Uni., Agra.